दुनिया की हर एक महिला को, एक दिन की छोटी बच्ची से लेकर बुढापे की चरम सीमापर पहुंची हुई वृद्धा को, अमरीका के ओहायो राज्य की महिलाओं की तरफ़ से यह निवेदन है कि इस दुनिया को बचाने के लिए वे सम्मिलित हों।

शॅरन मेहदी ने अपनी ५ साल की नाती के लिए एक सुंदर कथा 'द ग्रेट सायलेंट ग्रॅन्डमदर गॅदरिंग' लिखी है। उस कथा से हमें यह प्रेरणा मिली है। इस कथा का सार कुछ इस तरह है।

एक दिन, एक कॉफी हाउस में काम करनेवाले एक लड़के ने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा कि सामनेवाले पब्लिक पार्क में दो वृद्ध महिलाएँ चुपचाप खडी थीं। उन्होंने अच्छे से कपड़े पहने थे और वे दोनों सामनेवाले टाउन हॉल की इमारत पर नजर गडाए खडी थीं। उस लडके ने कॉफी हाउस में बैठे ग्राहकों से पूछा भी कि उन्हें क्या लगता है, वे दो महिलाएँ वहाँ इस तरह क्यों खडी हैं? लोगोंने कई तरह की आशंकाएँ जताईं। तब एक ५ साल का लड़का बोला, " उन दोनों में से एक मेरी दादी है और मैं जानता हूँ वे दोनों वहाँ क्यों खडी हैं। उन्हें दुनिया को बचाना है।" कॉफी हाउस में बैठे लोग हँसने लगे। घर जाते जाते लडके ने उन दोनों महिलाओं से सवाल किया कि इस तरह वे दोनों वहाँ क्यों खडी हैं? जवाब मिला, ' दुनिया को बचाने के लिए।'

रात के खाने पर लड़के ने यह बात अपने माता पिता को बतायी। लड़का और पिताजी जोर से हँसते रहे लेकिन माँ चुपचाप सुनती रही। खाने के बाद माँ यह बात फोन पर अपनी सहेलियों को बताती रही।

दूसरे दिन सुबह लड़के ने खिड़की से फिर बाहर झाँक कर देखा कि वे दो महिलाएँ वहाँ खडीं थी और उनके साथ खडी थी उसकी माँ, उसकी सहेलियाँ और कल कॉफी हाऊस में आयी हुई और एक महिला। सब की सब सामनेवाले टाउन हॉल की इमारत पर नजर गडाए खडी थीं। कॉफी हाउस में बैठे लोगों ने फिर हँसते हँसते कहा कि 'इस तरह से बाग में खडे होकर कहीं दुनिया को बचाया जाता है भला? उसके लिए तो सैन्य चाहिए। कुछ नहीं तो फलक, नारेबाजी तो होनी चाहिए.... इस तरह चुपचाप खडे रहने से क्या होगा?'

अगले दिन फिर वे सारी महिलाएँ उसी तरह से पार्क में खडी रहीं। इस बार उनकी कई सहेलियाँ भी उनके साथ थीं। फिर तो गाँव के अखबार वालों को खबर लेनी ही पडी। अगले दिन के अख़बार में सनसनी ख़बर जैसे ही छपी, पार्क में खडी रहने वाली महिलाओं की संख्या में मानो बाढ़ आ गयी। उस गाँव के मेयर ने पुलिस के मुखिया को बताया कि वह उन महिलाओं को पार्क से हटने के लिए कहें क्योंकि लोग गाँव की हँसी उडा रहें हैं। जब मुखिया ने महिलाओं से कहा कि इस तरह से इकठ्ठा वे खडी नही रह सकती क्यों कि उसके लिए प्रमाणपत्र का होना आवश्यक है, एक महिला ने कहा, " हमें

प्रमाणपत्र की क्या जरूरत जब कि हम अपनी अपनी जगह पर चुपचाप खडी हैं? हम ना तो नारे लगा रही हैं, ना ही भाषणबाजी कर रही हैं।" मुखिया पुलिस को यह बात माननी पड़ी और वह चल दिया।

इस समय पार्क में २२२३ महिलाएँ खडी थीं जिसमें शामिल थी मेयर की पत्नी, मुखिया पुलिस की पत्नी और एक ५ साल की लडकी। वे सब खडी थीं 'दुनिया को बचाने के लिये'।

कृपया दुनिया को बचाने में हमारा साथ दीजिए। यदि आप निम्नलिखित निवेदन से सहमत हैं तो तारीख १३ मई २००७ को आपके समय के अनुसार दोपहर १ बजे, सिर्फ ५ मिनट के लिए किसी एक जगह पर खडे रहिए। किसी पार्क, स्कूल के मैदान या किसी खुली जगह पर, जहाँ आप उचित समझें।

हम खडी हैं इस दुनिया के तमाम बच्चों के लिए तथा आनेवाली सात पिढ़िओं के बच्चों के लिए। यह हमारा सपना है कि उन्हें पीने के लिए साफ सुथरा पानी, ताज़ी हवा तथा पेटभर खाना मिले। यह दुनिया एक ऐसी दुनिया हो जहाँ उन्हें उनके बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक मूलभूत शिक्षा तथा बढते शरीर के लिए स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो। उन्हें ऐसा घर मिले जहाँ प्यार और सुख शांति हो। उन्हें अपने ही घर में या पाठशाला में डर डर के जीना ना पडे। हम सपना देखते हैं ऐसी दुनिया का।

यहीं कारण है कि हम यहाँ एकसाथ खडी हैं।

यदि आप चाहें तो इस प्रार्थना में अपने साथ अपने पुरुष साथियों तथा रिश्तेदारों को भी शामिल करा सकती हैं। समय के प्रारंभ और अंत की सूचना के लिए एक घंटी भी साथ में रखिए। इस मूक प्रार्थना के समय आप सोचिए कि आप व्यक्तिशः तथा सामूहिक तौरपर इस अभियान में क्या योगदान दे सकती हैं। किसी कारणवश आप खडी ना हो सकेंऔर बैठना चाहें, तो बैठ सकती हैं।

प्रार्थना के उपरान्त आप सब मिलकर हमारे इस सपने के बारे में चर्चा करें किइसे कैसे पूरा किया जा सकता है।

कृपया आप जिस जगह पर खडी रहना चाहती हैं उस जगह का पता हमारी वेबसाईट पर रजिस्टर करें।